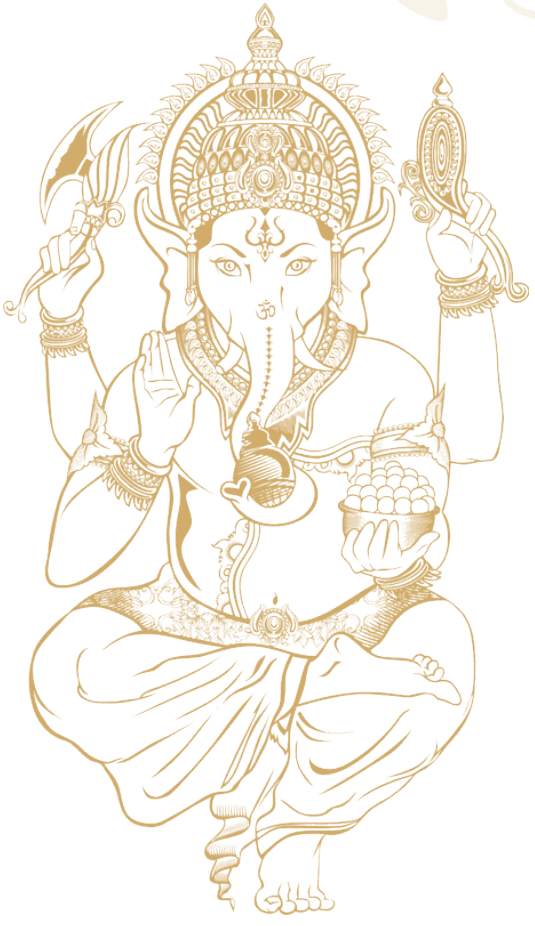

KAKA NITISH BRAMTA

30 Dec 2025

10:35 AM

Stoke-on-Trent

Model: Baby-Horoscope **Order No: 120924101**

तिथि 30/12/2025 **समय** 10:35:00 **वार** मंगलवार **स्थान** Stoke-on-Trent **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:18
अक्षांश 53:01:00 उत्तर **रेखांश** 02:11:00 पश्चिम **मध्य रेखांश** 00:00:00 पश्चिम **स्थानिक संस्कार** -00:08:44 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	17:02:46 घं
वेलान्तर	00:02:37 घं
सूर्योदय	08:22:27 घं
सूर्यास्त	16:00:48 घं
चैत्रादि संवत	2082
शक संवत	1947
मास	पौष
पक्ष	शुक्ल
तिथि	11
नक्षत्र	भरणी
योग	सिद्ध
करण	वणिज

अवकहड़ा चक्र

गण	मनुष्य
योनि	गज
नाड़ी	मध्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	चतुष्पाद
वर्ग	मृग
युँजा	पूर्व
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	लू-लूनेश
पाया(रा.-न.)	ताम्र-स्वर्ण
होरा	शुक्र
चौघड़िया	चर

विंशोत्तरी

शुक्र 10वर्ष 10मा 26दि

शुक्र

30/12/2025
25/11/2036

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	30/12/2025
राहु	26/01/2027
गुरु	26/09/2029
शनि	25/11/2032
बुध	26/09/2035
केतु	25/11/2036

योगिनी

भद्रिका 2वर्ष 8मा 21दि

भद्रिका

30/12/2025
21/09/2028

	00/00/0000
	30/12/2025
सिद्धा	23/03/2026
संकटा	03/05/2027
मंगला	22/06/2027
पिंगला	02/10/2027
धान्या	02/03/2028
भ्रामरी	21/09/2028

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			01:22:26	कुंभ	धनिष्ठा	3	मंगल	बुध	---	0:00			
सूर्य			14:45:31	धनु	पूर्वाषाढ़ा	1	शुक्र	शुक्र	मित्र राशि	1.20	मातृ	पितृ	जन्म
चंद्र			19:23:45	मेष	भरणी	2	शुक्र	राहु	सम राशि	0.95	अमात्य	मातृ	जन्म
मंगल		अ	17:16:22	धनु	पूर्वाषाढ़ा	2	शुक्र	चंद्र	मित्र राशि	1.18	भ्रातृ	भ्रातृ	जन्म
बुध			02:03:34	धनु	मूल	1	केतु	शुक्र	सम राशि	0.94	ज्ञाति	ज्ञाति	अतिमित्र
गुरु	व		27:20:18	मिथु	पुनर्वसु	3	गुरु	शुक्र	शत्रु राशि	1.28	आत्मा	धन	साधक
शुक्र		अ	13:01:24	धनु	मूल	4	केतु	बुध	सम राशि	0.99	पुत्र	कलत्र	अतिमित्र
शनि			01:51:24	मीन	पू०भाद्रपद	4	गुरु	राहु	सम राशि	0.84	कलत्र	आयु	साधक
राहु	व		16:55:42	कुंभ	शतभिषा	4	राहु	शुक्र	मित्र राशि		---	ज्ञान	प्रत्यारि
केतु	व		16:55:42	सिंह	पू०फाल्गुनी	2	शुक्र	चंद्र	शत्रु राशि		---	मोक्ष	जन्म

लग्न-चलित

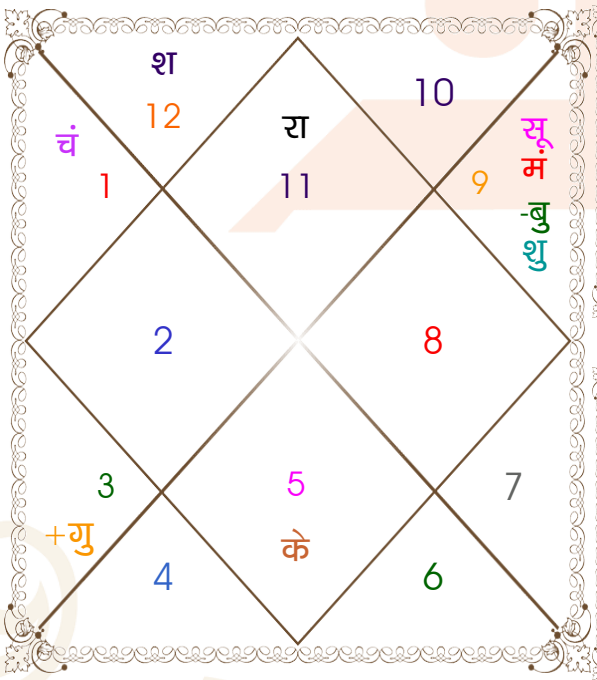

चन्द्र कुंडली

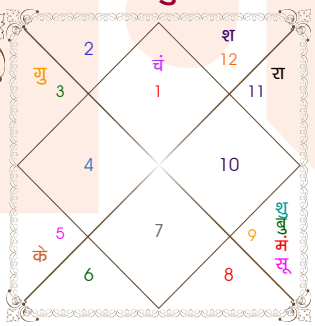

नवमांश कुंडली

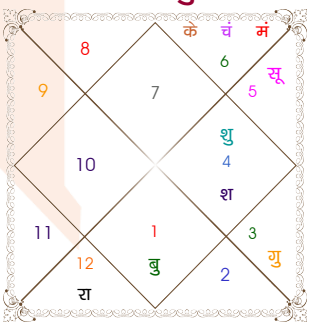

सर्वाष्टकवर्ग

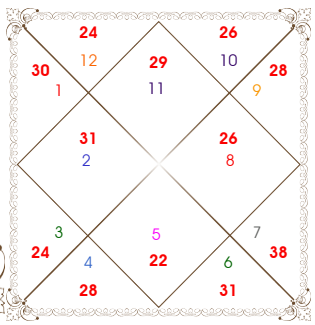

दशमांश कुंडली

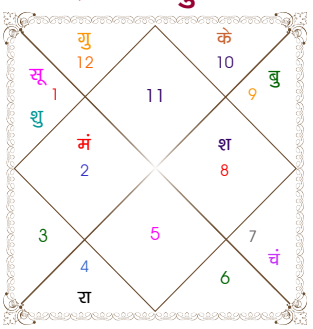

SHASTRI DEEPANSHU SHARMA
JAY MAA JYOTISH KENDRA HATKOTI
TEH - JUBBAL SHIMLA HIMACHAL PRADESH - 171206
Mob-9418272812
deepanshusharma239139@gmail.com

नक्षत्रफल

भरणी नक्षत्र के द्वितीय चरण में जन्म होने के कारण आपकी जन्म राशि मेष तथा राशि स्वामी मंगल होगा। नक्षत्रानुसार आपका मनुष्य गण, गज योनि, मध्य नाडी, क्षत्रिय वर्ण तथा मृग वर्ग होगा। भरणी नक्षत्र के द्वितीय चरण में उत्पन्न होने के कारण आपका जन्म नाम का प्रथम अक्षर "लू" से प्रारम्भ होगा।

भरणी नक्षत्र में जन्म लेने के कारण आप मनोरंजन के साधनों में गीत, संगीत, नृत्य या अन्य कलाएं तथा खेलकूद के प्रति विशेष आकर्षित रहेंगे तथा अपने समय का अधिकांश भाग इसी पर व्यतीत करेंगे। स्वभाव से ही पानी से आपको भय महसूस होगा। कभी कभी स्नानादि कर्म की भी आप इसी सन्दर्भ में उपेक्षा करेंगे। चंचलता का समावेश आपकी प्रवृति में रहेगा। तथा अन्य लोगों से आपका अच्छा व्यवहार नहीं रहेगा।

सदापकीर्ति र्हि महापवादैर्नाना विनोदैश्च विनीतकालः।
जलातिभीरूश्चपलः खलश्च प्राणी प्रणीतोभरणीजातः।।
जातकाभरणम्

अर्थात भरणी में उत्पन्न जातक लोकोपवाद से अपयश पाने वाला, अपने समय को नाना प्रकार के खेल या विनोद द्वारा व्यतीत करता है। यह जल से भीरू, चंचल प्रवृति तथा दुष्ट स्वभाव वाला होता है।

आप अपने संकल्प के पक्के होंगे। एक बार जिस संकल्प को ले लेंगे उसे जी जान से पूर्ण करेंगे। सत्य बोलना तथा सत्य का पालन करना आप अपना कर्तव्य समझेंगे। आपके शरीर में स्वस्थता बनी रहेगी तथा रोग ग्रस्त कम ही रहेंगे। चतुराई का गुण आप में स्वाभाविक होगा जो भी कार्य करेंगे आपकी दक्षता की झलक उसमें स्पष्ट दिखाई देगी। अतः आपका जीवन सुखी रहेगा।

कृत निश्चयः सत्यारुग्दक्षः सुखितश्च भरणीषु।
बृहज्जातकम्

अर्थात् भरणी नक्षत्र में जन्मा जातक सत्यवक्ता, बात का पक्का, रोगरहित और कार्यकलाप में चतुर होता है।

कभी कभी आप किसी विशेष बात की हठ करेंगे और उसे पूरा ही करके छोड़ेंगे चाहे अन्य लोगों को उस से कोई परेशानी ही क्यों न हो इससे अन्य लोग आपसे अप्रसन्न रहेंगे। आपके पास सम्पत्ति पूर्ण रूप से रहेगी एवं धनार्जन प्रचुर मात्रा में होता रहेगा, शरीर से भी आप स्वस्थ रहेंगे तथा मुखाकृति दर्शनीय रहेगी।

अरोगी सत्यवादी च सम्पद्युक्तो दृढब्रतः।
भरण्यां जायते लोकः सुमुखश्च सुनिश्चितम्।।

अर्थात् भरणी नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य रोग रहित, सत्यवादी, सम्पत्तिशाली और हठव्रती होता है। उसका मुख सुन्दर होता है। यह सुनिश्चयी होते है।

यदा कदा शारीरिक और मानसिक व्याकुलता से आप कष्ट का अनुभव करेंगे। जन सामान्य पर प्रभाव स्थापित करने के लिए कभी कभी आप कठोरता का भी प्रर्दशन करेंगे परन्तु धन से आप युक्त रहैंगे। तथा धनाभाव आजीवन नहीं रहेगा।

याम्यर्क्षे विकलोऽन्यदारनिरतः क्रूरः कृतध्नो धनी।
जातकपरिजातः

अर्थात् भरणी नक्षत्र में उत्पन्न बालक शारीरिक तथा मानसिक रूप से व्याकुल, दूसरे की स्त्री में अनुरक्त, क्रूर तथा कृतध्न एवं धनी होता है।

आपका जन्म ताम्रपाद में हुआ है। अतः जीवन में आप धन वैभव से प्रायः सुसम्पन्न ही रहेंगे तथा सुखपूर्वक जीवन में इसका उपभोग करेंगे। काव्यशास्त्र के प्रति भी आपकी रूचि रहेगी तथा इसमें आप परिश्रमपूर्वक ख्याति भी अर्जित करेंगे। भाइयों के प्रति आपके मन में पूर्ण स्नेह रहेगा तथा उनको आप हमेशा अपने ओर से प्रत्येक क्षेत्र में पूर्ण सहयोग प्रदान करते रहेंगे। सुन्दर वस्त्रों के प्रति आपके मन में आकर्षण रहेगा तथा इनको पहनने एवं संग्रह करने में आपकी पूर्ण रूचि रहेगी। आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा आप एक बलशाली पुरूष होंगे। साथ ही आप पराक्रम से भी युक्त रहेंगे एवं शौर्योचित कार्यों को करने के लिए सर्वदा उद्यत तथा तत्पर रहेंगे। आप सामान्यतया प्रसन्नचित रहेंगे। परन्तु आपका स्वभाव कृपण होगा। इसके अतिरिक्त आप एक विद्वान एवं सौभाग्यशाली पुरूष भी रहेंगे तथा सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक जीवन व्यतीत करेंगे।

आपका जन्म मेष राशि में हुआ है। अतः आप अल्प भोजन करने वाले होंगे। साथ ही अन्य भाईयों में श्रेष्ठ होंगे। आप माता पिता के इकलौते पुत्र भी हो सकते हैं।

मेषस्थे यदि शीतगौ च लघुभुक् कामी महोत्थाग्रजो।।
जातकपरिजातः

आपके शरीर का वर्ण ताम्रवर्ण के समान गौरवर्ण का होगा तथा आखें लालीयुक्त गोल होंगी। आपके सिर पर ब्रण का निशान भी हो सकता हैं।

अल्प केशों से सिर सुशोभित होगा तथा कमल की कान्ति के समान आपके हाथ पैर होंगे। जल से भयभीत रहना आपकी स्वाभाविक प्रवृति होगी। साहस तथा संघर्ष की शक्ति का आप में अभाव नहीं रहेगा तथा अपने साहस से कार्यों में सफलता प्राप्त करेंगे। आपकी प्रकृति चंचल होगी तथा धन को मान सम्मान से भी अधिक महत्व प्रदान करेगें जिससे कभी कभी परेशानियां उत्पन्न होंगी। सहयोगी तथा मित्र बड़ी संख्या में आपके पास होंगे। पुत्र भी पुत्रियों की अपेक्षा अधिक होंगे। स्त्री जाति आपकी कमजोरी होगी तथा उनके आगे आप

पराजित सा महसूस करेंगें। लेकिन जनसामान्य से आपका स्नेहयुक्त व्यवहार रहेगा। अपने सद्व्यवहार तथा विनयशीलता के कारण आप पूर्ण सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे।

सौववर्णाङ्गः स्थिरस्वः सहजविरहितः साहसी मानभद्रः।
कामार्तः क्षामजानुः कुनखतनुकचश्चत्रचलो मानवित्तः।।
पद्माभैः पाणिपादैर्वितत सुतजनो वर्तुलाकारनेत्रः।
सस्नेहतोयभीरू र्व्रणविकृतशिराः स्त्रीजितो मेष इन्दौ।।
सारावली

आप स्वभाव से ही शीघ्र क्रोध करने वाले तथा शीघ्र ही प्रसन्न होने वाले होंगे। आपकी प्रवृति सुदूर क्षेत्रों में भ्रमण करने की होगी। आपके हाथ की हथेली में शौर्य सूचक चिन्ह यथा पताका चक्र आदि हो सकते हैं। स्त्री वर्ग में आप काफी लोकप्रिय रहेंगे। लेकिन सबके साथ सहयोग करना आप अपना कर्तव्य समझेंगे तथा लोगों को अपनी परेशानी के समय भी सहायता प्रदान करेंगे।

वृताताम्रदृगुष्णशाकलघुभुक् क्षिप्रप्रसादोटनः।
कामी दुर्बलजानुरास्थिरधनः शूरोङ्गना बल्लभः।।
कुनखी व्रणाङ्किकतशिरा मानी सहोत्थाग्रजः।
शक्त्यापणितलेङतोळति चपलस्तोये च भीरुः क्रिये।।
बृहज्जातकम्

धन को आवश्यकता से अधिक महत्व प्रदान करने की प्रवृति आपके बुजुर्गो तथा श्रेष्ठ संबंधियों की असन्तुष्टि का कारण बनेगा। जिससे वे आपसे अलग हो सकते हैं या आप भी उनसे अलग हो सकते हैं। साथ ही आपके अधिकांश घरेलू कार्य स्त्री की सलाह से ही सम्पन्न होंगे अतः तनाव तथा अलगाव का यह भी मुख्य कारण रहेगा। धन तथा पुत्र से आप आजीवन युक्त रहेंगे तथा सामाजिक कीर्ति भी प्राप्त करेंगे।

स्थिरधनोः रहितः सुजनैर्नरः सुतयुतः प्रमदा विजितो भवेत।
अजगतो द्विजराज इतीरितं विभुतयाद्भुतया स्वसुकीर्तिभाक्।।
जातकाभरणम्

भ्रमण के लिए आप ऐसे स्थानों पर जाना पसन्द करेंगे जो अगम्य हो अर्थात् जहां का भ्रमण आसानी से न किया जा सके। आपके सामाजिक संबंध विस्तृत होंगे अतः अवसरानुकूल आप अभक्ष्य पदार्थो अर्थात् मांस, मदिरा इत्यादि का भी भक्षण या सेवन कर सकते हैं।

मेषे त्वगम्यागमनप्रियश्च त्वभक्ष्यभक्षयोः।
वृहत्पाराशर होराशास्त्र

आपकी प्रकृति में कभी कभी उग्रता का प्रभाव भी परिलक्षित होगा। जब कभी आप अनावश्यक उग्रता दिखाएंगे समस्याएं उत्पन्न होगी। प्रवृति भी आपकी प्रारम्भ से चंचल रहेगी

तथा अवसर पड़ने पर आप मिथ्याभाषण भी करेंगे।

वृतेक्षणो दुर्बलजानुरुग्रो भीरूर्जले स्याल्लघुभुक् सुकामी।
संचारशीलश्चपलोऽनृतोक्ति व्रणाङ्किताङ्गः क्रियभे प्रजातः।।
फलदीपिका

यौगिक क्रिया आपको रूचिकर लगेगी तथा सिर अल्प केशों से युक्त रहेगा। पित्त या गरमी प्रदान करने वाले पदार्थों का आप यथाशक्ति परहेज करें अन्यथा मस्तिष्क में विकार का योग बनता है। दुर्घटनाओं से बचें तथा शारीरिक सुरक्षा का भी पूर्ण ध्यान रखें।

भवति विकलकेशो योगकर्मानुशीलो।
न भवति सुसमृद्धो नैव दारिद्रय युक्तः।।
व्रजति च सविकारं भूतियुक्तः प्रलापी।
संभवति पुरूषोळयं मेष राशौ।।
जातक दीपिका

आप मनुष्य गण में उत्पन्न हुए हैं। अतः जन्म से ही आप धार्मिक प्रवृति के होंगे। देवताओं तथा ब्राहमणों में आपकी असीम श्रद्धा होगी। आप धनवान होंगे परन्तु साथ ही अभिमान भी आपके अन्दर होगा। आप दयावान तथा बलवान होंगे तथा दीन दुःखियों की आप सच्चे मन से सेवा करेंगे। आप विभिन्न प्रकार के कार्य तथा कलाओं के ज्ञाता होंगे। ज्ञान प्राप्त करने में आप की अभिरूचि रहेगी। आपका शरीर सुन्दर तथा कान्ति युक्त होगा। आप बहुत से लोगों को सुख प्रदान करेंगे तथा कई लोग आप पर आश्रित होंगे।

लोलनेत्रः सदा रोगी, धर्मार्थकृत निश्चयः।
पृथुजङ्घः कृतघ्नश्च निष्पापो राजपूजितः।।
कामिनीहृदयानन्दो दाता भीतो जलादपि।
चण्ळकर्मा मृदुश्चान्ते मेषराशौ भवेन्नरः।।
मानसागरी

मान सम्मान से आप हमेशा परिपूर्ण रहेंगे तथा आजीवन विपुल धन के स्वामी रहेंगे। आपकी आखें बड़ी बड़ी होंगी तथा निशाने बाजी में आप अत्यन्त ही चतुर होंगे। आपके शरीर का वर्ण गौरवर्ण होगा तथा नगरवासियों को आप वश में करने में सफल रहेंगे। आप किसी नगर के सम्मानित तथा आदरणीय व्यक्ति भी हो सकते हैं।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

SHASTRI DEEPANSHU SHARMA
JAY MAA JYOTISH KENDRA HATKOTI
TEH - JUBBAL SHIMLA HIMACHAL PRADESH - 171206
Mob-9418272812
deepanshusharma239139@gmail.com

आप गज योनि में पैदा हुए हैं। अतः आप राजा के द्वारा पूर्ण सम्मानीय होंगे तथा बडे बडे अधिकारियों तथा मंत्रियों से आपके घनिष्ठ संबंध होंगे। आप आत्मबल बुद्धिबल तथा बाहुबल से युक्त रहेंगे। समस्त सांसारिक तथा भौतिक सुखों का आप उपभोग करेंगे। आप किसी मंत्री या उच्चाधिकारी के सहयोगी या स्वयं भी उच्चाधिकारी हो सकते हैं। आप बाल्य काल से ही उत्साही रहेंगे तथा इसी उत्साही प्रवृति से कार्यों में सफलता प्राप्त करेंगे।

राजमान्यो बली भोगी भूपस्थान विभूषणः।
आत्मोत्साही नरो जातः गजयोनौ न संशयः।।
मानसागरी

अर्थात् गजयोनि में उत्पन्न जातक राजमान्य, बली, भोगी, राज्यस्थान को सुशोभित करने वाला तथा उत्साही होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति तृतीय भाव में है। अतः माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आपके प्रति उनका पूर्ण अपनत्व तथा स्नेह का भाव रहेगा एवं जीवन में सर्वप्रकार से आपकी सहायता करने के लिए वे नित्य तत्पर रहेंगी। साथ ही शक्ति, साहस एवं पराक्रम में आपकी वृद्धि में वे सदैव सहायक रहेंगी। इसके अतिरिक्त वे आपको समय समय पर अच्छा भोजन खिलाने के लिए भी तत्पर रहेंगी।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान तथा श्रद्धा का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा पालन के लिए प्रायः तत्पर रहेंगे। साथ ही यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु इससे आपके मधुर संबंधों में कोई विशेष प्रभाव नहीं पडेगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में उनकी पूर्ण सेवा तथा आर्थिक सहायता तथा अन्य प्रकार का सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार असुविधा नहीं होने देंगे। इसके लिए आप सर्वदा प्रयत्नशील रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य एकादश भाव में स्थित है अतः आप पिता के हमेशा प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से वे शारीरिक व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। धनैश्वर्य एवं सम्मान से वे हमेशा युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको सर्वप्रकार के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपके धनार्जन के साधनों की उन्नति में भी वे आपको प्रायः सहयोग तथा निर्देश प्रदान करते रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। आप जीवन में उनको हमेशा वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्टानुभूति नहीं होने देंगे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति एकादश भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की वे अनुभूति करते रहेंगे।

आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में अवसरानुकूल आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आप आय के साधनों की वृद्धि करने में भी उनसे सहायता अजित करेंगे। आप को सुख दुःख में उनसे पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा वे आप पर विश्वास करेंगे।

आप भी हृदय से उनके प्रति सम्मान का भाव रखेंगे तथा समयानुसार उनको आथिक तथा अन्य क्षेत्रों में सहायता प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही उनकी आय की वृद्धि में भी आप वांछित सहयोग देंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर ही रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उनमें तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु यह स्थाई रहेगी एवं कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

आपके लिए कार्तिक मास, प्रतिपदा, षष्ठी, एकादशी शुक्ल तथा कृष्ण पक्ष दोनों की तिथियां, मघा नक्षत्र, विष्कुम्भ योग, बवकरण, रविवार तथा प्रथम प्रहर एवं मेष राशि में स्थित चन्द्रमा आपके लिए हानिकारक है। अतः आप 15 अक्टूबर से 14 नवम्बर के मध्य 1,6,11 शुक्ल तथा कृष्ण पक्ष की तिथियों में कोई भी शुभ कार्य, व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, साझेदारी लेन देन आदि न करे। इससे आपको लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक होगी। साथ ही मघा नक्षत्र, प्रथम प्रहर तथा मेष राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। उपरोक्त अशुभ समय में शरीर की भी पूर्ण सुरक्षा रखें।

यदि आपके लिए समय प्रतिकूल चल रहा हो मानसिक अशान्ति, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि ,नौकरी ,पदोन्नति प्राप्ति में बाधा उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट श्री हनुमान जी की उपासना करनी चाहिए। इसके साथ ही सोना, तांबा, गेहूं, घी, रक्त वस्त्र आदि पदार्थो का दान करना चाहिए इससे अशुभ फलों में कमी होगी तथा मानसिक शान्ति प्राप्त होगी। साथ ही मंगल के कम से कम 7000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए। मंगलवार के उपवास भी शुभकार्यों की वृद्धि करने में सहायक सिद्ध होंगे।

ऊँ क्रां क्रीं क्रों सः भौमाय नमः।
मंत्र- ऊं हुँ थीं भौमाय नमः।

SHASTRI DEEPANSHU SHARMA
JAY MAA JYOTISH KENDRA HATKOTI
TEH - JUBBAL SHIMLA HIMACHAL PRADESH - 171206
Mob-9418272812
deepanshusharma239139@gmail.com